मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

वर्ष-२ अंक-६

माह : दिसम्बर २०१६

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-६

माह- दिसम्बर २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

प्राथमिक शिक्षा देश की आधारभूत शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य तभी पूर्ण हो सकता है जब प्राथमिक स्तर की सीखने– सिखाने की प्रक्रिया बच्चों की समझ के साथ पूर्ण हो। बच्चों की यह समझ उनके उच्चस्तरीय शिक्षा उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक होती है।

बेसिक शिक्षा मे मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक जिस तरह से अपने कार्यों को साझा करते हैं। वह वास्तव में सोशल मीडिया का एक बेहतरीन प्रयोग है, जहाँ अन्य लोग भी बेसिक शिक्षा मे शिक्षकों द्वारा किए गये कार्यों से अवगत हो जाते हैं। मिशन शिक्षण संवाद निश्चित ही शिक्षा का उत्थान और शिक्षक का सम्मान लक्ष्य प्राप्ति की ओर है। मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका मे संकलित अनेक उपयोगी स्तंभ यह संकेत करते हैं कि वास्तव में बेसिक बदल रहा है।

मेरी ओर से मिशन शिक्षण संवाद को पत्रिका हेतु बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

Pallavi Singh

डॉ0 पल्लवी सिंह
राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त,
विभागाध्यक्ष – संस्कृत,
किशोरी रमण कन्या महाविद्यालय,
जनपद – मथुरा।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

आज हम सभी के मन में शिक्षा के उत्थान के लिए कुछ न कुछ नया करने की सकारात्मक सोच बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है। लेकिन हम सबमें से अनेकों सहयोगी साथी इसके मात्र एक पक्ष को ही उपयोगी समझते हैं। इसलिए हम आप सभी से आधुनिक शब्दावली में निवेदन करना चाहते हैं कि किसी भी कार्य में दो पक्ष होते हैं। एक हार्डवेयर और दूसरा सॉफ्टवेयर। आपको पता होगा कि यदि दोनों में से एक खराब हो तो क्या परिणाम उचित मिल सकते हैं, शायद नहीं क्योंकि आप कम्प्यूटर से भले ही परिचित न हों लेकिन मोबाइल से भलीभाँति परिचित हैं। जिसमें सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर का अच्छी तरह अनुभव किया गया है। यदि एक खराब हो जाए तो दूसरा अपने आप काम करना बन्द कर देता है। ठीक इसी प्रकार बेसिक शिक्षा में लगातार परेशानी का कारण यही रहा कि बेसिक शिक्षा की स्थानीय अथवा प्रशासनिक अव्यवस्थाओं से किसी विद्यालय का हार्डवेयर खराब हो जाता है अथवा किसी का सॉफ्टवेयर ही उड़ जाता है। लेकिन बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों ने अब स्वयं ही यह निश्चित कर लिया है कि हमें अब शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए कुछ भी करना पड़े अपने विद्यालय का हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों को सही रखकर इस देश को और बेसिक शिक्षा को आगे बढ़ाना है तथा बेसिक शिक्षा और शिक्षक दोनों का सम्मान बचाना। इन्हीं अनमोल रत्नों में से कुछ शिक्षक सहयोगियों की प्रेरक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का संग्रह के रूप में ''शिक्षण संवाद'' नाम से मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका आप सभी के सामने है जिसमें शिक्षा के उत्थान के लिए, हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर के विविध पक्षों का व्यवहार अनुभवों एवं ज्ञान का संग्रह होता है। जिसके माध्यम से विगत एक वर्ष से आप सभी ने एक–दूसरे से शिक्षा के उत्थान के लिए बहुत कुछ सीखा और सिखाया तथा अपने विद्यालय एवं बच्चों को लाभान्वित भी किया है। आशा है वर्ष–2020 में भी आपका सहयोग आदरणीय कलाम सर के विजन–2020 के रूप में गुणात्मक रूप से मिलता रहेगा। वर्ष–2019 में आप सभी द्वारा किए गये समर्पित सकारात्मक सहयोग के लिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से बहुत–बहुत आभार एवं वर्ष–2020 के लिए बहुत–बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ!

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	1
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	3–4
मिशन गीत	5
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	6–8
निन्दक नियरे राखिए	9
टी.एल.एम.संसार	10
कविता–क्रिसमस	11
नवाचार–अभिनय शिक्षण	12
इंग्लिश मीडियम डायरी	13
बाल कविता	14
प्रेरक–प्रसंग	15
बाल कहानी	16
गणित विशेष	17–18
बाल कविता	19
बाल साहित्य	20
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	21
बात महिला शिक्षकों की	22
योग विशेष	23–24
खेल विशेष	25–26

Value System

The role of teacher in strengthening it

शिक्षण संवाद

Indian culture and heritage is inherent from its rich tradition] diverse migration specific rituals] distinguished standards and behavior- The uniqueness of Indian culture and literature lies in its strong social system and values- The ancient education system infused the sense of responsibilities, social cultural values, ideal citizenship, aptitude to things and act for the benefit of the entire world- Our beliefs, perceptions, way of thoughts, imparting knowledge mostly focused on these classifications of values:

Dharma (Virtues)	-	A moral value
Artha (Wealth)	-	An economic value
Karma (Pleasure)	-	A psychological value
Moksha (Self &realization)	-	A spiritual value

A teacher is an organization of ideas and themes- At home the child's ideals are his parents and in schools he forms his ideals around his teacher- Therefore] we need rationale, social and sensitive good teachers- In a teacher they have the ability of understanding the children's emotions and their causes, the capability of effectively regulating these emotions in oneself and in others and most importantly being able to use the emotions as a source of information for problem solving, being creative and dealing with social situations-

The ultimate aim of teaching-learning must be value oriented to develop the physical, intellectual and emotional facets of the child's personality- Value acquisition goes on constantly in the school through various activities like organizing assembly, educational e-cursion, historical visit, art/painting competition, seminar and workshop, celebration of national/ international days- It could also be inculcated through festivity of eminent personality*s birthday, co-curricular activities, yoga-meditation, fasting, knowledge through spiritual books, service to humanity, alms to poor and deserves, plantation, poster making (it could be on topics that invoke awareness e.g. Save Water/ Save Environment/ Conserve Rainwater/ Save bio-diversity).

All the above mentioned activities in the school with the help of a teacher could be fruitful in giving the child a greater capacity for self-reflection and self-appraisal.

Pooja Chaturvedi
Assistant Teacher
Junior High School Ghunghrala
Block & District Hapur

''सकारात्क ऊर्जा के साथ कार्य कर परिवर्तन के वाहक बन अपने को स्थापित करें शिक्षक''

—डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक/संपादक

वर्तमान दौर में प्रदेश की बेसिक शिक्षा में परिवर्तन का महादौर चल रहा है। बेसिक शिक्षा विभाग में द्वारा ऊपर से नीचे तक सभी स्तरों पर सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से लेकर बेसिक शिक्षा मंत्री डॉ0 सतीश द्विवेदी, महानिदेशक श्री विजय किरन आनंद व निदेशक डॉ0 सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह जी व हजारों कर्मठी शिक्षकों की पूरी टीम सकारात्मक परिवर्तन लाने को अथक परिश्रम कर रही है।

विद्यालयों में आधारभूत संरचना से लेकर शिक्षकों के प्रशिक्षण, सपोर्टिव सुपरविजन, लर्निंग आउटकम आधारित बच्चों के अधिगम स्तर की जानकारी, शिक्षकों के लिए सहयोगी साहित्यों (मॉड्यूल) ध्यानाकर्षण, आधारशिला और शिक्षण संग्रह का निर्माण, गतिविधि आधारित शिक्षा जैसे कई सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं।

ऐसे में हर कर्मठी शिक्षक को सरकार द्वारा चलाये जा रहे उक्त कार्यक्रमों के सहारे अपने विद्यालय व कक्षाओं में मनोवांछित परिणाम लाने के लिए हरसम्भव सहयोग व प्रयास करने की आवश्यकता है। इस समय हम सरकार के कदम से कदम मिलाकर अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर शिक्षा का उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

वर्तमान में बेसिक शिक्षा महानिदेशक श्री विजय किरन आनंद जी द्वारा प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के आमूलचूल परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी कदम उठाए जा रहे हैं। स्कूलों में भौतिक सुविधाओं के उन्नयन को लेकर कायाकल्प जैसी योजना पर युद्धस्तर पर कार्य किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत विद्यालय भवनों को आकर्षक

वर्तमान में बेसिक शिक्षा में चल रहा परिवर्तन का महादौर

रंग रोगन, फर्नीचर, स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाएँ विकसित की जा रही हैं जिसके मार्च 2020 तक पूरी हो जाने का लक्ष्य है।

प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में पढ़ रहे लाखों विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की पहचान करने हेतु हर 3 माह पर लर्निंग आउटकम परीक्षाओं के माध्यम से उनकी जानकारी कर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

शिक्षकों के सपोर्टिव सुपरविजन हेतु और प्रत्येक जनपद में एआरपी व एसआरजी का चयन किया गया है। जो विद्यालयों में जाकर गुणवत्ता उन्नयन हेतु सपोर्टिव सुपरविजन करेंगे।

शिक्षकों में पेशेवर योग्यता को और समृद्ध करने व अपने कार्य को और बेहतर ढंग से करने के लिए तीन प्रमुख मॉड्यूल ध्यानाकर्षण, आधारशिला और शिक्षण संग्रह का विकास किया गया है जो हर शिक्षक को गतिविधि आधारित शिक्षण में मदद करेगी।

इसी तरह वर्तमान में एनसीईआरटी द्वारा दुनिया के सबसे बड़े निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है जो कि प्रत्येक शिक्षक व शिक्षा अधिकारी दोनों के लिए अनिवार्य है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षण शास्त्र, विषय शिक्षण व लीडरशिप से सम्बंधित कुल 12 मॉड्यूल में सभी को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

इसके अलावा सर्व शिक्षा अभियान, एससीईआरटी व बेसिक शिक्षा निदेशालय द्वारा अनवरत शिक्षकों को प्रोत्साहित करने लिए विविध प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित कर अच्छा कार्य कर रहे शिक्षकों को सम्मनित किया जा रहा है।

इस तरह जिस तरह वर्तमान सरकार बेसिक शिक्षा के गौरवपूर्ण युग को लाने के लिए प्रयासरत हैं और हमारे कर्मठी शिक्षक उससे कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार हैं, निश्चित ही हम सब सफल होंगे। ...तो आइए हम सब अपनी बेसिक शिक्षा की बेहतरी के लिए सरकार के कदम से कदम मिलाकर साथ चलें और बेसिक शिक्षा के गौरवपूर्ण पल को वापस लाकर दुनिया के सामने एक नजीर पेश करें।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती
9415047039
Email: sarvestkumar@gmail.com

मिशन गीत

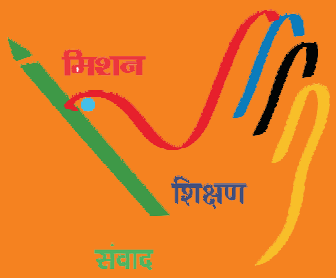

रघुनाथ द्विवेदी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय चायल,
विकास खण्ड–चायल,
जनपद–कौशाम्बी।

एक प्रयास करें जो कभी न छोड़े हम,
शिक्षण और संवाद से सबको जोड़ें हम।
हाँ सबको इस नेक मिशन से जोड़ें हम,
दूर करें हर गम को हवा के झोंके हम।
गुरुओं के हर एक गरल को सोखें हम,
धवन रश्मि को शिक्षण पथ पर मोड़ें हम।
शिक्षण और संवाद से सबको जोड़ें हम।।

एक मिशन हो, एक दिशा हो और सहारा एक बनें,
पहुचाएँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक ऐसा किनारा एक बनें।
कार्य लोकहित करें हमेशा बिना किसी को छोड़े हम,
शिक्षण और संवाद से सबको जोड़ें हम।।
हाँ हर इक शिक्षक को अब मिशन से जोड़ें हम।।

हृदय में हो सम्मान भावना, प्रेम, समर्पण और दया,
शिक्षा हित हो, शिक्षण हित हो और सवेरा एक नया।
ईश्वर का आशीष संग हो, मिथक सभी का तोड़ें हम,
शिक्षण और संवाद से सबको जोड़ें हम।
हाँ पावन पवित्र मिशन से सबको जोड़ें हम।।
प्रेम सूत्र में साथी सबको जोड़ें हम।।।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

श्रीमती चयनिका (प्रधानाध्यापिका)
प्राथमिक विद्यालय आटा,
बनियाखेड़ा, सम्भल

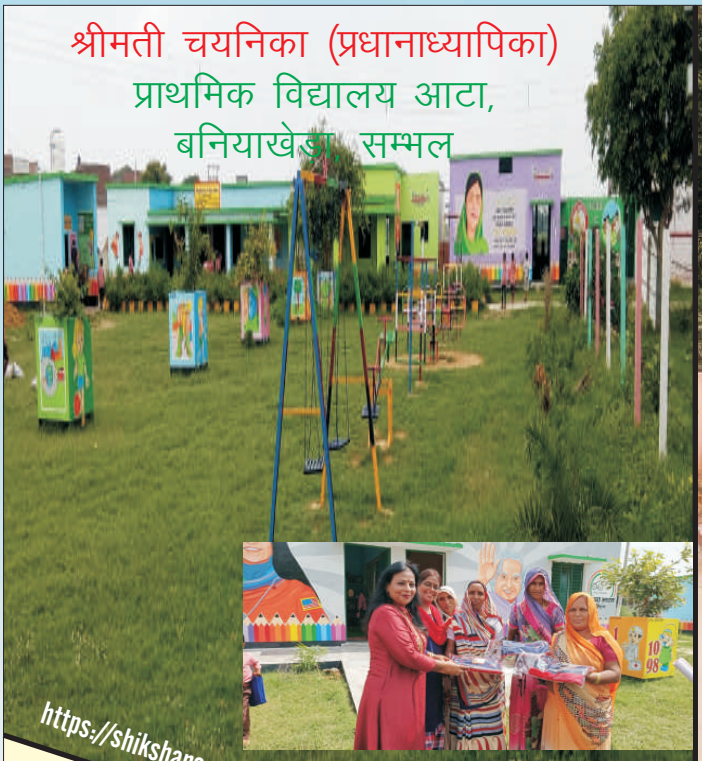

https://shikshansamvad-blogspot.com/2019/10/blog&post_80-html

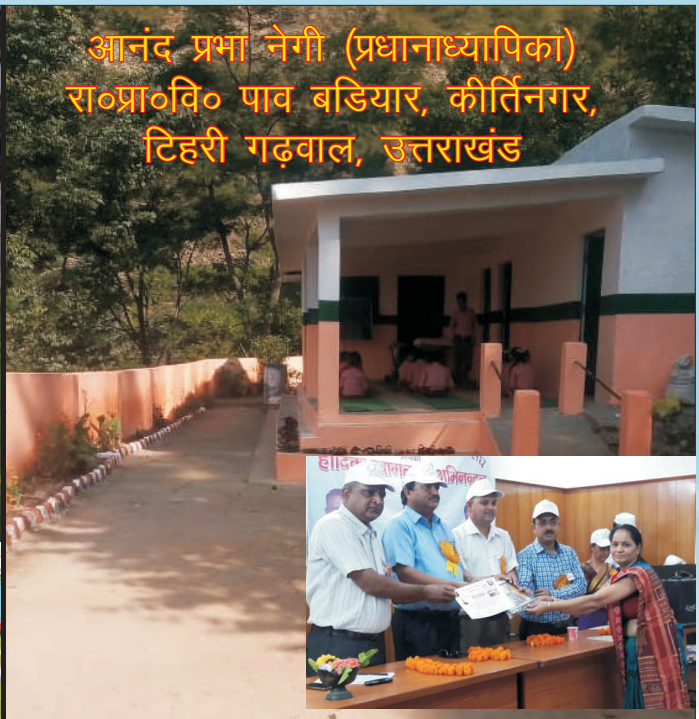

आनंद प्रभा नेगी (प्रधानाध्यापिका)
रा०प्रा०वि० पाव बडियार, कीर्तिनगर,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

Https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/10/blog&post_40-html

लक्ष्मी काला
(प्रभारी प्रधानाध्यापिका)
रा०उ०प्रा०वि० सूर्या गांव भीमताल,
नैनीताल, उत्तराखंड

Https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/10/blog&post_23-html

महावीर प्रसाद प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय जल्लापुर
रामदयाल, क्यारा, बरेली

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/10/blog&post_831-html

वैभव जैसवार
(सहायक अध्यापक)

उच्च प्राथमिक विद्यालय कैंच, मरौरी, पीलीभीत

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/10/blog&post_81-html

ANMOL RATNA

ऋचा सिंह प्रभारी प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय सिहुलिया,
सुकरौली, कुशीनगर

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/10/blog&post_556-html

अंजना महेंद्र सिंह,
पू.मा.वि.जोखबाद, सिकन्दराबाद,
बुलन्दशहर

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/11/blog&post_37-html

डॉ० ललित कुमार (प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय खिजरपुर जोशीया,
ब्लॉक–लोधा, जनपद– अलीगढ़

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/11/blog&post_48-html

पुष्पेंद्र कुमार गोस्वामी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीजपुर,
ब्लॉक– ऊन, जिला– शामली

https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/11/blog&post_28-html

राजकुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
रूपा धमना
क्षेत्र– मऊरानीपुर,
झांसी (उत्तर प्रदेश)

Https://shikshansamvad-blogspot-com/2019/11/blog&post_41-html

निन्दक नियरे राखिए

कुछ चर्चा बेसिक शिक्षा को बेहतर बनाने की...

शिक्षण संवाद

निन्दक शब्द स्वयं में एक प्रेरणा देता है। यदि इसमें से छोटापन अर्थात छोटी ई की मात्रा हटा दी जाती है तो, यही निन्दक शब्द नन्दक हो जाता है अर्थात आनन्द लेने वाला। निन्दक नियर होता है तभी कर्ता डियर होता है यानी सर्वप्रिय हो पाता है। निन्दक कर्ता का बहुत बड़ा सुधारक होता है। यूँ तो कबीरदास जी के सारे दोहे कुछ न कुछ सीख देते हैं, पर यह दोहा जल संरक्षण का भी कार्य करता है। बिना जल और रसायन के लेप से निन्दारस की छींटों से ही ब्रम्हाण्ड की सबसे सुन्दर, ज्ञानवान कृति का मन भी निर्मल करने की सीख देता है। जब ये कृतियाँ निर्मल होंगी तो स्वस्थ वातावरण सृजित होगा, सकारात्मकता बढ़ेगी, सीखने सिखाने का माहौल पुष्पित पल्लवित हो सकेगा। इस प्रकार यह दोहा पर्यावरण संरक्षण का बहुत बड़ा कार्य करता है और वो भी केवल निंदा रूपी ऊर्जा द्वारा।

इन्ही बातों का हृदयंगम कर मैंने हमेशा अपने निंदकों को गुरु माना है और उनके साथ समीपता स्थापित की है। उनके मुख से उच्चारित शब्दों की तरंगें प्रत्येक कोशिका तक पहुँच तन और मन की सफाई के साथ–साथ आगे बढ़ने की दिशा में एक बल भी लगाती हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती हैं। इसी क्रम में जब ये गुरु कहते हैं, ''मैडम तो बच्चों से जाने क्या–क्या करवाती हैं– कभी गिनती पहाड़ों को नाच–नाच कर करवाती हैं, कभी नाटक करवाती हैं, कभी ढोल पीटती हैं। अरे! पढ़ाई तो हमारे जमाने में होती थी, बच्चा शिक्षक को देखकर ही भय खाता था आदि–आदि।'' ये सब सुनकर कुछ समझाने की जुर्रत करना मानो निन्दारस को बढ़ावा देना ही होता है।

निन्दारस तो बहुत ही रसीला होता है। उसका रसीलापन अन्यों को भी निन्दक बनने का सुनहरा अवसर देता है। निन्दारस के दो प्रकार होते हैं– एक सकारात्मक निंदा दूसरी नकारात्मक निंदा।

सकारात्मक निन्दक को समीक्षक कहते हैं, पर नकारात्मक निन्दक ही असली निन्दारस के अधिकारी होते हैं। धरती पर ये ही प्राणी ज्यादा पाये जाते हैं। जिनको बिना सोचे विचार अपने समीप रखना चाहिए, क्यूँकि आपके मन का निर्मल होना इन्ही पर आश्रित हैं। वैसे भी अगर आपको अच्छा करने की आदत है तो आप निन्दकों से घिरे रहेंगे और आपका स्वभाव भी निर्मल बना रहेगा। इस बाबत आपको कुछ तनाव महसूस हो तो संत कबीरदास जी के दोहे की पुनरावृत्ति आपको सुकून देगी–

निन्दक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

हमारे कार्य की कोटि किस श्रेणी की है, इसके लिए मापन के यन्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं होती है। निंदा शब्दों की मात्रा से ही इसका सही सही परिज्ञान हो जाता है। निन्दारस से ओतप्रोत निन्दक के चारों ओर के वातावरण से कर्ता का जागरण होता है और उसमें उच्च कोटि के दो गुणों का विकास होता है– प्रथम, यदि गलती होती है तो वह सुधरती है, नहीं तो तथ्य को कई कोणों से देखने की दिव्यष्टि तो मिल ही जाती है। द्वितीय, धृति अर्थात धैर्य का भी विकास होता है। जहाँ धीरता होती है, वहाँ के परिवेश में निर्वरता का विकास स्वतः ही हो जाता है। इससे मन की निर्मलता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। अतः जिसका मन निर्मल वही तो बनेगा सबल। इसलिए सन्त कबीरदास जी की वाणी का करें हम अमल–

निन्दक से उपकारी कौन? जो अपना चित्त जलाता।
दोष दूसरों के निहारकर, उनको उत्कृष्ट बनाता।

प्रतिमा भारद्वाज
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय वीरपुर छबीलगढी
विकास खण्ड–जवां,
जनपद–अलीगढ़।
मो0–7895941244

गणित में संख्याओं का योग

शिक्षण संवाद

टी एल एम बनाने की सामग्री– शादी का पुराना कार्ड, चार्ट पेपर, कैंची और कलर पेन टी एल एम बनाने की विधि– सर्वप्रथम शादी के पुराने कार्ड को पेंसिल से निशान लगाकर दो आयताकार बॉक्स बना लेते हैं। जिन्हें कैंची की सहायता से काट लेते हैं तथा चार्ट पेपर से दो आयताकार लंबी पट्टियाँ काट लेते हैं तथा इसी चौड़ाई की दो खाँचे शादी के पुराने कार्ड के ऊपर व नीचे बना लेते हैं। इन दोनों पट्टियों पर कलर पेन से अंकों को लिख लेते हैं तथा इन दोनों आयताकार स्थानो के मध्य जोड़ का चिन्ह बना लेते हैं।

टी एल एम का प्रयोग– सर्वप्रथम दोनों आयताकार पट्टियों को खाँचों में लगा देते हैं तथा इन्हें ऊपर नीचे खींचते हैं जिससे कटे हुए स्थान पर एक अंक प्रदर्शित होता है और उन दोनों पक्षों के मध्य बने जोड़ के चिन्ह द्वारा बच्चों को जोड़ का ज्ञान कराया जा सकता है।

टी एल एम का लाभ–

1–कक्षा एक के बच्चों को एक अंक की संख्याओं का जोड़ आसानी से सिखाया जा सकता है।

2–बच्चों को अंकों के पूर्व ज्ञान से जोड़ा जा सकता है।

3– बच्चों को गणित विषय को खेल–खेल में सिखाया जा सकता है।

विक्रम रूसिया
प्राथमिक विद्यालय चुरारा द्वितीय
विकास खण्ड–मऊरानीपुर
जनपद–झाँसी।

क्रिसमस

डॉ0 प्रवीणा दीक्षित
हिन्दी शिक्षिका,
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र,
जनपद–कासगंज।

जब–जब क्रिसमस आता है,
याद हमें तू आता है।
सेंटा क्लॉज––सेंटा क्लॉज...

दाढ़ी जिसकी व्हाइट है,
छोटी जिसकी हाइट है।
चोंगा टोपा लाल है,
खुशियों को बरसाता है।
जब–जब क्रिसमस आता है,
याद हमें तू आता है।
सेंटा क्लॉज–––सेंटा क्लॉज

प्रेम सिखाता बच्चों को,
गले लगाता बच्चों को।
सबके दुःख को हरता है,
सपने पूरे करता है।
मस्ती में लहराता है,
जब–जब क्रिसमस आता है,
याद हमें तू आता है।
सेंटा क्लॉज–––सेंटा क्लॉज.....

हर बच्चे को प्यारा है,
लगता बहुत दुलारा है।
बच्चों के संग बच्चा बन जाता,
देता बहुत सहारा है।
जब–जब क्रिसमस आता है,
याद हमें तू आता है।
सेंटा क्लॉज–––सेंटा क्लॉज

अभिनय शिक्षण

शिक्षण संवाद

उद्देश्यः विषय वस्तु को सरल और रोचक बनाना

विवरणः किसी पात्र का अभिनय करना हमें उसके ज्यादा नजदीक ले जाता है। जिस तरह कोई फिल्म जब बच्चे देखते हैं तो उसके पात्र के संवाद उन्हें आसानी से याद हो जाते हैं और वे अनेक बातें फिल्मों से सीखते हैं। इसी प्रकार बच्चों को विभिन्न प्रकरण समझाने के लिये जब उनसे रोल प्ले कराया जाता है तो वे उस पात्र की गहराई में जाते हैं और सरलता से सिखाते हैं। जल प्रदूषण, प्रकाश संश्लेषण, मानव का विकास आदि प्रकरण साथ ही जनजागरूकता के विषय अभिनय शिक्षण द्वारा सरलता से सीखे सिखाये जा सकते हैं।

लर्निंग आउटकम....

प्रकरण की पूर्ण समझ का विकास।
विषयवस्तु का अन्य परिस्थितियों में प्रयोग करने की समझ का विकास।
पर्यावरण के प्रति चेतना का विकास।
सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता का विकास।

संयोगिता
प्रधानध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अदलपुर,
विकास खण्ड–डिलारी
जनपद–मुरादाबाद।

Before motivating others, motivate myself

शिक्षण संवाद

A great move of basic education has been started in the form of English medium school under Basic Education Department. Although thousands of teacher was already doing their duties so nicely that they got success in establishing a new positive approach of people towards free education in government schools . Still they were facing a major drawback of medium of language of education infront of their opposition i.e. private or public schools. But now, after getting the new opportunity in the form of English medium school, we teachers are ready to make it incredible. Myself is also a part of an english medium school and i am also busy in hard practicing of teaching and learning of those village children whom parents didn't know or hardly know about reading & writing in English. These poor children hardly have anyone who can take care of their studies. In their surrounding, there is a majority of illiterate people. Their brother and sister are studying in hindi medium.

As it is well said that nothing is impossible if one have a strong will power and a planned strategy.

An outcome of my strategy is as follows-

Before motivating others, I have motivate myself for this. I tried to be a role model to my students. Instead of being a teacher or a philosopher, I made myself a facilitator for these children. I never try to predict anything about these children. I have always given a pat on their back to motivate them even on a little achievement. I am a positive thinker always. Different kinds of activities and innovation are included for their ease. Teaching and learning is based on their daily life and familiar Environment.

Reinforcement at time to time whenever needed. And at last but not least I am making their school environment print rich so that learning English be a fun.

Jyoti Chaudhary
Assistant Teacher,
English Medium
Primary School Islamnagar,
Moradabad.

शिक्षक की सू. बो. प. लि.

सर्वप्रथम सीखते हैं,
हम सुनना.....
बाल मन के भावपूर्ण रागों को,
उम्मीद भरे हृदय के स्वरों को,
सादगी मे डूबे.....
बचपन के संगीत को!

फिर बोलते हैं हम.....
प्रेम, वात्सल्य से पूर्ण शब्द,
मधुर सम्बन्ध जोड़ते वाक्य,
प्रेरक, ज्ञानवर्धक, परिपक्व....
संवाद!

हम शिक्षक पढ़ते भी हैं.....
बच्चों की आँखों मे लिखे..
सपनों को,
नन्हे प्रयासों में छिपे हुनर को,
बुलंदियाँ छूने के उनके.....
जज़्बे को!

अंततः कर्तव्य है हमारा.....
लिखें उनके स्वर्णिम भविष्य...
की गाथा,
उनके सफल जीवन....
की कहानी,
व सम्पूर्ण व्यक्तित्व .....
की परिभाषा!

दीप्ति खुराना
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय पंडिया,
विकास क्षेत्र–कुंदरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

भारत के पाँचवे प्रधानमंत्री चौधरी श्री चरण सिंह

शिक्षण संवाद

सर्दियों का समय था, गुनगुनाती धूप पड़ रही थी। भारतीय संसद के बाहर चाय का ठेला लगाये एक व्यक्ति ग्राहकों की राह देख रहा था। तभी संसद से निकलकर एक बुजुर्ग बण्डी पहने, टोपी लगाये और हाथ में छड़ी लिए कुछ लोगों के साथ उसकी दुकान पर आकर बैठ गये व चाय देने के लिए कहा। दुकानदार ने चाय दी व बातों–बातों में उनसे कहा की आप संसद में रहते है वहाँ पर प्रधानमंत्री जी से कहें कि हम अनपढ़, गरीब, मजदूर और किसानों के लिए भी कुछ सोचें। तब उन बुजुर्ग ने कहा की तुम खुद क्यों नही कहते, जो भी कहना है कहो, मैं ही हूँ प्रधानमंत्री।

ऐसे सरल और सहज थे 23 दिसम्बर सन 1902 को जन्मे अपने भारत के पाँचवे प्रधानमंत्री चौधरी श्री चरण सिंह जी। चौधरी साहब की सार्थक किसान व मजदूर हितैषी नीतियों के कारण ही उन्हें किसानों का मसीहा कहा जाता था।

राजीव कुमार गुर्जर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बहादुरपुर राजपूत,
विकास क्षेत्र–कुंदरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

किताबों की दुनिया

शिक्षण संवाद

मोहन एक छोटे से गाँव जगनपुर में रहता है। मोहन को अपना गाँव बहुत प्यारा लगता है। मोहन के गाँव में एक बड़ा तालाब है। तालाब में कमल के फूल खिले रहते हैं। इस तालाब पर दूर देश के बड़े–बड़े साइबेरियन पक्षी भी आते हैं। तालाब में मछलियाँ भी हैं। गाँव के लोग कभी–कभी सिंघाड़े की बेल तालाब में बो देते तो मोहन को बेल से निकले सिंघाड़े भी खाने में बड़ा मजा आता है।

तालाब में रामू काका अपनी नाव से लोगों को सैर भी कराते हैं, मोहन को तो वह दुलार में यों ही घुमाते रहते हैं। इस समय मोहन की उम्र लगभग दस वर्ष की हो रही है। उसका नाम गाँव के प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 5 में लिखा हुआ है। लेकिन मोहन का मन विद्यालय जाने को नहीं होता था। उसे तो भैंस चराने, तालाब की सैर और इधर–उधर घूमने में जो आनन्द आता वह विद्यालय में बिल्कुल नहीं मिलता। एक दिन मोहन यों ही घूम रहा था। वह उस दिन विद्यालय नहीं गया था। वहाँ उसके विद्यालय के अध्यापक मिल गए जो विद्यालय में छुट्टी के बाद घर जा रहे थे। उन्होंने तुरन्त मोहन से पूछा कि वह विद्यालय क्यूँ नहीं आया?मोहन के पास कोई उत्तर नहीं था। लेकिन उसी समय संयोग से उसकी माँ भी वहाँ थी, उन्होंने कहा, ''मास्टर साहब! इसे दिन भर घूमना ही अच्छा लगता है।'' इस पर उसके अध्यापक ने कहा कोई बात नहीं, मोहन कल तुम विद्यालय जरूर आना। अगले दिन जब मोहन विद्यालय पहुँचा तो उन्होंने उसे सुन्दर सी चित्रों वाली कई पुस्तकें दी। मोहन ने धीरे–धीरे पुस्तकों को देखना, समझना आरम्भ किया। लेकिन उसे पढ़ने में थोड़ी कठिनाई भी हुई क्यूँकि वह प्रतिदिन विद्यालय नहीं जाता था। गुरु जी ने किताबों को पढ़ने में मोहन की मदद की और पुस्तकालय की और किताबों से भी परिचय कराया। धीरे–धीरे मोहन की रुचि पुस्तकों की ओर फिर अपने विद्यालय के विषयों को तरफ भी बनी।

मोहन को बाहरी दुनिया के साथ किताबों से जुड़ना व किताबों से बाहर के संसार को जोड़ना भाने लगा। अध्ययन का अपना ही आनन्द है, उसे बहुत अच्छे से समझ आ गया था।

ऋतु दुबे
प्राथमिक विद्यालय अण्डूतारा
(अंग्रेजी माध्यम),
जनपद–अयोध्या।

मानव कंप्यूटर–शकुंतला देवी

शिक्षण संवाद

"बिना गणित के आप कुछ नहीं कर सकते। आपके चारों ओर संख्याएँ हैं।" यह वक्तव्य है भारतीय मानव कंप्यूटर तथा मेंटल कैलकुलेटर जैसी उपाधियाँ रखने वाली शकुंतला देवी का, जिनका जन्म 4 नवंबर 1929 को मैसूर (कर्नाटक) में हुआ था। जिस तरह हम बड़ी गणनाएँ करने के लिए कैलकुलेटर या कंप्यूटर जैसी मशीनें प्रयोग करते हैं, उसी प्रकार शकुंतला देवी बड़ी से बड़ी गणनाओं को पलक झपकते अपने दिमाग से हल कर देती थीं। परिवार में आर्थिक तंगी की वजह से उनका दाखिला 10 वर्ष की उम्र में कॉन्वेंट स्कूल में पहली कक्षा में कराया गया, किंतु फीस न दे पाने के कारण 3 महीने बाद ही उनका नाम स्कूल से काट दिया गया। स्कूल से नाम कटने के बाद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी प्रतिभा को निखारने का कार्य जारी रखा तथा बाद में दुनिया ने उनका लोहा माना।

शकुंतला देवी की असाधारण प्रतिभा मैसूर यूनिवर्सिटी और अन्नामलाई यूनिवर्सिटी में सामने आई। महज 6 वर्ष की उम्र में उन्हें मैसूर यूनिवर्सिटी में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके समय में ट्रूमैन हेनरी सेफर्ड जैसे असाधारण गणना करने वाले व्यक्ति की मौजूदगी के बावजूद लंदन, अमेरिका और यूरोप में शकुंतला की अंकगणितीय क्षमता की चर्चा और ख्याति दब नहीं पाई।

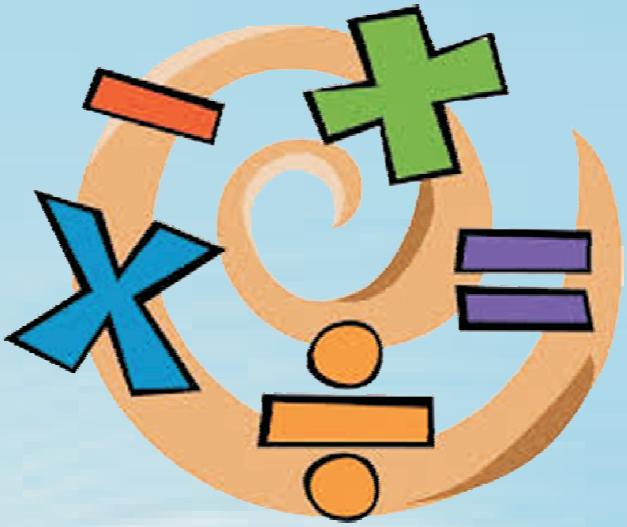

सन् 1977 में अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में उन्हें 201 का 23वां घात बताने को कहा गया जो उन्होंने कॉपी पेन के प्रयोग के बिना ही मात्र 50 सेकेंड के अंदर बता दिया था।

उन्होंने गणित के अलावा ज्योतिष शास्त्र के बारे में भी लिखा। गणित व पहेलियों के बारे में जहाँ उन्होंने 'मैथब्लीट', 'फन विथ नंबर्स' और 'पजल्स टू पजल्स यू' जैसी किताबें लिखी, वहीं ज्योतिष शास्त्र पर 'एस्ट्रोलॉजी फॉर यू' लिखी।

सन् 1969 में फिलीपींस यूनिवर्सिटी ने उन्हें ''वूमेन ऑफ द ईयर'' पुरस्कार से सम्मानित किया। 1982 में उनका नाम 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में शामिल किया गया क्योंकि उन्होंने मात्र 26 सेकेंड में 13 अंकों की दो संख्याओं का गुणनफल बता दिया था। 21 अप्रैल 2013 को किडनी की बीमारी के कारण बेंगलुरु में उनकी मृत्यु हुई।

शकुंतला देवी अपने आप में एक मिसाल थीं, जिन्होंने भारत का नाम विश्व–पटल पर अंकित किया। आज भी उनके जैसी कम्प्यूटर दिमाग वाली महिला भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में दूसरी नहीं हुई।

मृदुला वैश्य,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मीठाबेल,
विकास खण्ड–ब्रह्मपुर,
जनपद–गोरखपुर।

गौरैया रानी गौरैया रानी

गौरैया रानी, गौरैया रानी
मेरे स्कूल में आओ न,
देखो बगिया में पड़े-दाने चुग जाओ न।
मेरे मुंडेर पर चहक-चहक कर,
मधुर गीत सुनाओ न।
स्कूल में आकर अपने नन्हें प्यारे बच्चों को,
उड़ना तुम सिखलाओ न।
अपने देश को छोड़कर तुम कहाँ चली गयीं,
फिर आकर अपना घोंसला बनाओ न।
गौरैया रानी, गौरैया रानी,
मेरे स्कूल में आओ न।
फुदक-फुदक कर चहक-चहक कर
सभी को एक साथ सदा खुश रहने का
सबक तुम सिखलाओ न।
मेरी बगिया कितनी सुंदर,
रखा है दाना-पानी,
अपनी भूख मिटाओ न।
गौरैया रानी गौरैया रानी
मेरे स्कूल में आओ न।।

नरेंद्र सिंह कुशवाहा
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय ज्ञानपुर प्रताप सिंह,
विकास खण्ड-अजीतमल,
जनपद-औरैया।

बाल कविता

जब दुनिया नई नई थी

शिक्षण संवाद

यदि हम अपने बारे में जानते हैं तो ठीक बात है। यदि हम अपने आसपास के बारे में जानते हैं तो अच्छी बात है। लेकिन यदि हम अपने देश के दूरस्थ क्षेत्रों के विषय में भी जानते हैं तो बहुत ही अच्छी बात है। हम हिन्दीभाषी क्षेत्रों का साहित्य तो पढ़ते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है कि बस यहीं की कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं या अपने में सम्पूर्ण हैं और कुछ अलग पढ़ने की आवश्यकता नहीं। 29 प्रदेशों वाला भारत देश विविधताओं से भरा हुआ है और एक शिक्षक होने के नाते यह हमारा उत्तरदायित्व है कि विद्यार्थियों का ध्यान देश के अन्य भूभागों की ओर भी आष्ट कराएँ और इसका सबसे अच्छा साधन है। विभिन्न क्षेत्रों का साहित्य पढ़ना।

भारत के कोने–कोने में अनेकों कहानियाँ बिखरी पड़ी हैं। भारत के वनों एवं पहाड़ों में एक से एक लोककथा सुनाई जाती है और इनका संकलन एक किताब के रूप में किया गया है जिसका नाम है– जब दुनिया नई नई थी। इस किताब को वेरियन एल्विन ने लिखा है जोकि एक घुमक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति हैं और जनजातीय क्षेत्रों में घूम–घूमकर स्थानीय लोगों से कथाएँ सुन–सुनकर उनका संकलन किया है। एनबीटी इंडिया से प्रकाशित इस पुस्तक में एक से एक दिलचस्प किस्से हैं। मसलन हाथियों के पंख क्यों नहीं होते? आग की खोज कैसे हुई? महिलाओं के दाढ़ी, मूँछ क्यों नहीं होती?यह कहानियाँ पूर्णतः कपोल–कल्पना पर आधारित हैं लेकिन हैं बहुत रूचिकर।

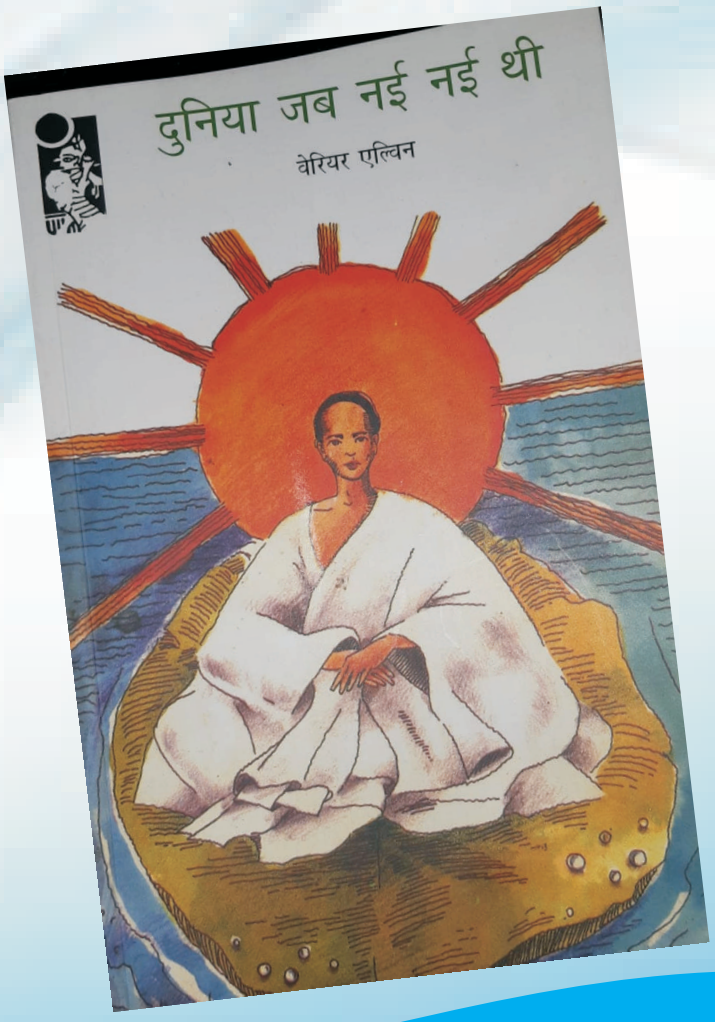

यदि आप इस पुस्तक को अपने विद्यालय के पुस्तकालय में रखते हैं तो विद्यार्थियों को दो लाभ होंगे। एक तो ये कि उनकी कल्पना शक्ति को जबरदस्त उड़ान मिलेगी दूजे वो लोककथाओं में रूचि लेने लगेंगे जिससे गैर हिंदीभाषी साहित्य के प्रति उनका लगाव बढ़ेगा। तो इस पुस्तक को आप अपने पुस्तकालय में स्थान दे रहे हैं न?

हाँ हूँ मैं लड़की

हाँ हूँ मैं लड़की

हक है मुझे अपने सपनों को पूरा करने और देखने का
अधिकार है मुझे अपने सही गलत फैसले करने का
वर्चस्व रखती हूँ मैं स्वतंत्र रूप से जीने के लिए
हक है मुझे अपनी प्राथमिकताओं को पूरा करने का
स्वतंत्र हूँ मैं स्वच्छंद विचरण करने के लिए
अधिकार है मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का
जिजीविषा की भावना रखती हूँ मैं इस संसार में
क्षमता है मुझमें अपने अंदर गहराइयों में छिपी हुनर को पहचानने का
अस्तित्व है मेरा इस समाज में, स्वयं को सिद्ध करने का
रखती हूँ मैं साहस अकेले दुनिया से लड़ने का
अधिकार है मुझे भी ''ना'' कहने का
हाँ हूँ मैं लड़की,
मैं हर दर्द को सहने का दम रखती हूँ

रचयिता
आराधना कुशवाहा
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मोहरगंज,
विकास खण्ड–चहनियां,
जनपद–चन्दौली।

आवृति अग्रवाल

सावित्रीबाई फुले

शिक्षण संवाद

महिला शिक्षकों की बात हो और देश की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जिक्र ना हो ऐसा नहीं हो सकता। सावित्रीबाई फुले केवल एक शिक्षिका ही नहीं बल्कि एक मार्गदर्शक और लोगों के लिए मिसाल थीं जिन्होंने अपने दम पर दुनिया जीती। उन्हीं की तरह आज भी हमारी महिला शिक्षकों ने जिंदगी के हर पहलू पर सफलता प्राप्त की है। घर हो या विद्यालय वह अपनी भूमिका उसी रूप में बखूबी निभाती है। जिस तरह से घर पर अपने बच्चों की देखभाल करती है उसी प्रकार और उससे कहीं ज्यादा वह विद्यालय में बच्चों की देखभाल करती हैं। एक महिला शिक्षिका कभी माँ, कभी दीदी, कभी टीचर बनकर बच्चों का सर्वांगीण विकास करने में लगी रहती है। फिर भी यह कहते हुए मुझे दुख होता है कि उनकी कार्यक्षमता पर उँगली उठती रहती है। आज तो नई तकनीकी के कारण वह और अधिक कार्य कुशल हो गई हैं। मोबाइल, लैपटॉप का प्रयोग करके नई–नई जानकारियाँ और नए–नए प्रयोग कर रही हैं, नवाचार कर रही हैं, स्मार्ट क्लास चला रही हैं और साथ ही साथ बालिकाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए रोजगारपरक शिक्षा भी दे रही है। समर कैंप लगा रही हैं जिससे उन्हें विद्यालय शिक्षा के अलावा अलग से शिक्षा मिल सके। मेरा मानना है कि एक महिला शिक्षक बच्चों की भावनाओं को अच्छी तरह से समझकर उनकी उसी प्रकार से समस्याओं को दूर करती हैं। वह अपने बच्चों का भावात्मक, कलात्मक, संज्ञानात्मक विकास करती हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूँगी।

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो

विश्वास रजत नग पग में,

पीयूष स्रोत सी बहा करो

जीवन के सुंदर समतल में।''

आवृति अग्रवाल
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय नवीपुर,
विकास खण्ड–मुरादनगर,
जनपद–गाजियाबाद।

सावित्रीबाई फुले

A new form of yoga that improves Brain.

शिक्षण संवाद

"Cross your hands, hold your ears and do sits ups."

Remember school punishment where you would have to cross your hands, hold your earlobes and do sit ups.

Super Brain Yoga seems to be a new kind of Yoga, but in real it is a modern name for an ancient Indian technique known as 'Thoppukaranam'.

In ancient India, teachers {Guru}used to give punishment to the kids which was called 'Sit Ups' or 'Uthak-Baithak'. The strange fact is that it was a powerful technique used by teachers to improve focus and grades concentration of a child.

Recently a school in Haryana has decided to introduce 'Sit Ups' in its Curriculum as 'Super Brain Yoga'. A Government school in Bhivani has set to make 'Sit Ups' compulsory under a pilot project.

Let's see how this punishment i.e. 'Sit Ups' can actually be beneficial for the kids.

Benefits of 'Sit Ups or
Super Brain Yoga'-:

'Super Brain Yoga' strengthens left and right brain and synchronizes it.
It induces calmness in kids, decreases anxiety in Hyperactive children, increases creativity, improves focus, memory and concentration, relieves stress and makes children more psychologically balanced. It gives shape to the personality of children. It specially helps children with Dyslexia, Autism, Alzimers, learning difficulties, poor memory and retention.
It is a scientifically validated method to help to energies brain and to enhance its sharpness and clarity.

I practice this method in my classroom and found it as an extremely effective method to get my students more focused towards studies and more psychologically balanced.

Shilpi Upadhyaya
Assistant Teacher,
Primary School Biharigarh,
Block-Mujaffrabad,
District-Saharanpur.

टेनिस

शिक्षण संवाद

टेनिस का नाम सुनते ही नजरों के सामने हरे घास के मैदान में पीली गेंद और और बल्ले से खेलते हुए खिलाड़ियों की आति उभर आती है। पूर्व में यह अंग्रेजों का खेल माना जाता रहा है। परंतु वर्तमान समय में यह भारतवर्ष का भी लोकप्रिय खेल है जिसपर हम भारतवासियों ने अपनी धाक जमाई है। यह दो टीमों द्वारा, जिसमें एक टीम में एक या दो खिलाड़ी होते हैं, गेंद के द्वारा खेला जाने वाला खेल है।

इस खेल का प्रारम्भ 12वीं शताब्दी में उत्तरी फ्रांस से माना जाता है। उस समय इस खेल में गेंद को हथेली से मारकर खेला जाता था। जिसके कारण इसे गेम ऑफ द पाम कहा जाता था। रैकेट से खेलने का आरम्भ 16वीं शताब्दी में हुआ और इसे टेनिस कहा जाने लगा। 19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में इंग्लैंड में लान टेनिस का जन्म हुआ जो आज ओलम्पिक में शामिल है।

उपकरण–

टेनिस खेलने के लिए बल्ले(टेनिस रैकेट), गेंद व आयताकार मैदान (टेनिस कोर्ट) की आवश्यकता होती है।

1. टेनिस रैकेट– यह तार से बुना होता है तथा इसको पकड़ने के लिए हैण्डिल लगा होता है। मारने वाले क्षेत्र की लम्बाई 29 इंच और चौड़ाई 12.5 इंच होती है।

2. गेंद– गेंद का रंग पीला होता है, जो कि खोखली होती है। इस गेंद का व्यास 68 मिमी0 तथा वजन 56.7 ग्राम होता है।

3. टेनिस कोर्ट– कोर्ट मिट्टी, घास, रबर या प्लास्टिक का बना हो सकता है। यह आयताकार होता है। एकल प्रतिस्पर्धा के लिए 23.77 मीटर लम्बा व 8.23 मीटर चौड़ा होता है। युगल प्रतिस्पर्धा के लिए 23.77 मीटर लम्बा व 10.97 मीटर चौड़ा होता है।

खेल का तरीका– खेल का प्रारम्भ टॉस से किया जाता है। टॉस जीतने वाले को सर्विस या पाला चुनना पड़ता है। इसमें गेंद को विरोधी की सतह पर टप्पा खिलाना होता है और वो इसे वापस करने में असफल होता है तो अंक गवां बैठता है। इसमें 15, 30 व 40 प्वाइंट का खेल होता है। 40 से अधिक अंक मिलने और एक गेम जीत जाता है और 6 से अधिक गेम जीतने पर एक सेट जीतता है। 2 या तीन सेट जीतने वाला विजेता होता है।

स्पर्धाएँ:–

विश्व स्तर पर चार स्पर्धाएँ होती हैं। इन स्पर्धाओं को ग्रैंडस्लैम कहा जाता है, जो निम्नवत हैं–

1. जनवरी में ऑस्ट्रेलिया में ऑस्ट्रेलियन ओपन–हार्ड कोर्ट में(प्लास्टिक या रबर)

2. मई में फ्रांस की फ्रेंच ओपन– क्ले कोर्ट में (मिट्टी)

3. फ्रेंच ओपन के 2 हफ्ते बाद लन्दन की विम्बल्डन ओपन – घास के मैदान

4. सितम्बर में अमेरिका में अमेरिकन ओपन–हार्ड कोर्ट में।

टेनिस के भारतीय सितारे–

सानिया मिर्जा, लिएंडर पेश, महेश भूपति

टेनिस निःसन्देह ही आकर्षक व उपलब्धि प्रदान करने वाला खेल है।

डॉ0श्रद्धा अवस्थी
सहायक शिक्षिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय सनगाँव,
विकास खण्ड–हँसवा,
जनपद–फतेहपुर।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात